International Journal of Sanskrit Research 2023; 9(4): 142-143

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2023; 9(4): 142-143
© 2023 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 19-05-2023
Accepted: 28-06-2023

आसुतोष कुशवाहा
भूतपूर्व शोधार्थी, संस्कृत विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश भारत

Corresponding Author:
आसुतोष कुशवाहा
भूतपूर्व शोधार्थी, संस्कृत विभाग, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली, उत्तर प्रदेश भारत

आचार्य धनञ्जय के नाट्य भेदक तत्व की दृष्टि से कर्णभारम् नाटक का अनुशीलन

आसुतोष कुशवाहा

सारांश
संस्कृत साहित्य रचना परम्परा अपनी विविध विधाओं में अविच्छन्न रूप से विकसित हो रही है। इसी परम्परा में संस्कृत का काव्यशात्रीय आचार्यो ने काव्य को दो भागों में विभक्त किया है–1. श्रव्य 2.दृश्य। दृश्य काव्य के अन्तर्गत नाट्य (नाटक) ग्रन्थ आते है। क्योंकि इनका अभिनय रंगमंच पर किया जाता है। ये दर्शकों के द्वारा के द्वारा देखे जाते हैं। संस्कृत नाटक को समालोचको ने नाटकान्तं कवित्वम् कहा है अर्थात् नाटक कवित्व का चरम परिपाक है। वही श्रव्य काव्य (गद्य, पद्य, चम्पू,)की अपेक्षा दृश्य काव्य (नाटक) अधिक प्रभावशाली होता है। इसकी कथावस्तु में दृश्य और श्रव्य दोनो का भान एक साथ लोगों को प्राप्त होता है क्योंकि कवि अपने नाटको में कान्तासम्मित उपदेश के द्वारा मर्मस्पर्शी शैली में विविध प्रंसगो के माध्यम से संकेत करता है जो सामाजिको के लिए मार्गदर्शक तथा जीवनोपयोगी होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में संस्कृत नाट्य साहित्य के कवि भास के एकांकी नाटक कर्णभारम् का अनुशीलन आचार्य धनंजय के नाट्यशस्त्रीय ग्रन्थ दशरूपक में प्राप्त नाट्य के भेदक तीन तत्व – वस्तु , नेता और रस को लेकर किया गया है।

कूटशब्द : वस्तु, नेता, रस

प्रस्तावना
संस्कृत नाट्य साहित्य के कवि भास के 13 नाटकों का पता सन् 1909ई0 में महामहोपाध्याय श्री टी0गणपति शास्त्री के ट्रावनकोर राज्य से प्राप्त पाण्डलिपियों के प्रकाश में लाने से होता है। महाकवि कालिदास ने मालविकाग्निमित्रम् नाटक की प्रस्तावना में प्रथितयशसां भासमौमिल्लकविपुत्रादीना के द्वारा सादर स्मरण किया है। इससे ज्ञात होता है कि भास कालिदास के पूर्ववर्ती कवि थे एवं प्रसिद्ध नाटककार थे। भास के नाटकों में उनके जीवन सम्बन्धी कोई विवरण नहीं मिलता है। महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री द्वारा सम्पादित भासनाटकचक्रम ग्रन्थ में भास को 13 नाटकों का कर्ता बताया है।[1]
भास के 13 नाटकों में प्रतिज्ञायौगन्धरायणम् स्वप्नवासवदत्तम्, उरुभंग्गमदूइतवाक्यम्, पंचरात्रम, बालचरितम् दूतघंटोत्कच, कर्णभारम, मध्यमव्योयाग, प्रतिमानाटकम् अभिषेकनाटकम् रुदत्तम् इत्यादि हैं।[2]
भास के उपरोक्त नाट्यग्रन्थों में से हम कर्णभारम् नाटक का आचार्य धनंजय के नाट्यभेदक तत्व की दृष्टि से अनुशीलन इस प्रकार करते है–
संस्कृत नाटयशास्त्र की दृष्टि आचार्य धनंजय ने अपवने दशरुपक ग्रन्थ में नाट्य भेदक तीन तत्व 1–वस्तु, 2–नेता, 3–रस को माना है।

वस्तु नेता रसस्तेषां भेदकः।[3]

वस्तु
वस्तु दो प्रकार का होता है। प्रथम अधिकारिक वस्तु तथा दूसरी प्रासंगिक वस्तु।

तत्राधिकारिकं मुख्यमङ्गं प्रासङ्गिकं विदुः।[4]

वस्तु को ही अन्य आचार्यों ने कथावस्तु, इतिवृत्त आदि कहा है। अधिकारिक कथावस्तु नाटक के आदि से अन्त तक चलती है। इसके फल का स्वामी नाटक का नायक होता है। प्रासंगिक वस्तु पताका व प्रकरी से दो प्रकार की होती है। पताका वस्तु की कथा दूर तक चलती है जिसका नायक मुख्य के गुणों से न्यून तथा मुख्य नायक की फल प्राप्ति में सहायक होता है। प्रकरी वस्तु में छोटे–छोटे प्रसंगो की कथा आती है जो एक देश तक चलती है।[5]

भास प्रणीत कर्णभारम् नाटक महर्षि वेदव्यास के महाभारत की कथा पर आधारित है। महाभारत के शान्तिपर्व के पंचम अध्याय में कर्ण के जीवन की कठिनाईयों, समस्याओं और बाधाओं का वर्णन मिलता है।[6]

कर्णभार को नाट्य–रचना के किस प्रकार में रखें यह समस्या आती है क्योंकि इसे व्यायोग नहीं माना जा सकता। न तो कोई संघर्ष या युद्ध आदि और न ही वीर रस का वर्णन है, अतएव कर्णभार को उत्सृष्टिकांक नामक एकांकी नाटक माना जा सकता है।[7]

दशरुपककार धनंजय उत्सृष्टिकांक का लक्षण देते है कि :

उत्सृष्टिकांड्के प्रख्यातं वृत्तं बुद्धयां प्रपंचयते
रसस्तु करुणः स्थायी नेतारः प्राकृता नराः।।
भाववत्ससन्धिवृत्यंङेगर्युक्तः स्त्रीपरिवेदितैः।।
वाचायुद्धं विधातव्यं तथा जयपराजयौ।।[8]

अर्थात उत्सृष्टिकांक रुपक में इतिहास प्रसिद्ध कथावस्तु, करुण अंगी रस, साधारण जन नायक, मुख तथा निर्वहण संधि, भारती वृत्ति तथा उनके अंगो की योजना, स्त्रियों के विलाप रहित, वाग्युद्ध एवं जय पराजय का वर्णन होता है।

कर्णभारम् की कथावस्तु प्रख्यात ऐतिहासिक ग्रन्थ महाभारत से है। इसमें कल्पना एवं करुणरस की अनुभूति प्रारम्भ से समाप्ति पर्यन्त होती रहती है। वही किसी भी स्थल पर दैवी व्यक्ति नहीं मिलते है तथापि इन्द्र भी कर्ण के पास मनुष्य रुप में ही आते है। इसमें केवल मुख एवं निर्वहण संधियां, वाग्युद्ध का वर्णन है। केवल युद्ध की पृष्ठभूमि उपस्थित की गई है। कर्णभार में न कोई स्त्री पात्र और न उसके रुदन का दृष्य दिखलाई पड़ता है। अतः हम मूल्यांकन करने पर पाते हैं कि कर्णभार अंक या उत्सृष्टिकांक रुपक के अधिक निकट है।

कर्णभार रुपक एकांकी कोटि का है। इसका नायक कर्ण है जो कुन्ती पुत्र है। इसी की कथा आदि से अन्त तक नाटक में चलती है। कर्ण की कथा को आधिकारिक इतिवृत्त में रखा जा सकता है क्योंकि महाभारत के युद्ध स्थल में कौरव की सेना में सेनापति तथा अंगदेशाधिपति कर्ण का अपने सारथि शल्य से परशुराम से कपटपूर्ण शस्त्रविद्या सीखने का वर्णन, कर्ण का ब्राह्मण वेषधारी इन्द्र को कवच और कुण्डल दान में देने की कथा का वर्णन है।

कर्णभार रुपक में प्रासंगिक कथा के अन्तर्गत पताका और प्रकरी आदि का वर्णन नहीं है।

नेता

कर्णभार एकांकी नाटक का नायक कर्ण एक सहृदय, शूर तथा दानी योद्धा है। जहाँ एक ओर कर्ण अपने उत्तरादायित्व के निर्वहन करने के लिए आगे बढ़ता है वहीं दूसरी ओर उसके सम्मुख अनेक बाधाएँ और निराशाएं प्रबल होती प्रतीत हो रही है। कर्ण ब्राह्मणधारी होकर कपटपूर्वक परशुराम से शस्त्र विद्या ग्रहण करने के बाद भी शाप के कारण युद्ध में अस्त्र का विफल होना और अर्जुन के सम्मुख रथ का भूमि में धस जाना, फिर भी रथ से उतरकर ब्राह्मण रुपधारी इन्द्र को कवच कुण्डल दान देता है। इस प्रकार से ज्ञात होता है कि कर्ण के हृदय में ब्राह्मण गौ, धर्म के प्रति आस्था थी। कर्ण अपने जीवन में सोना ही ब्राह्मणों को दान देता था। वहीं सारथि शल्य के मना करने पर भी ब्राह्मण (इन्द्र) को अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए कवच कुण्डल दान दे देता है। कर्ण को भारतीय आदर्श और संस्कृति के प्रति अनन्य श्रद्धा है। एक राजपुरुष, साहसी, स्वकर्तव्यपरायण, द्रुयोधन का परममित्र, मातृप्रेम, आदि अनेक गुणों से परिलक्षित दिखलाई पड़ता है।

कर्णभार स्त्री पात्र रहित नाटक है तथा अन्य पात्रों में कर्ण सारथि शल्य, भट (सूचक) शक (ब्राह्मणरुपधारी इन्द्र) देवदूत (इन्द्रसन्देश वाहक) आदि का चित्रण भी मिलता है।

रस

कर्णभार नाटक में महाकवि भास ने करुण रस को प्रधान माना है अन्य रस में वीर की अभिव्यक्ति भी देखने को मिलती है। यद्यपि कर्णभार नाटक में करुणरस की अभिव्यक्ति स्पष्ट रुप से नहीं दिखलाई देती है फिर भी समग्र नाटक के अनुशीलन से कर्ण की बेबसी और मन की झुंझलाहट से स्पष्ट हो जाती है। इतने उदात्त चरित्र को बार–बार वंचित और दुःखित दिखाकर भास ने करुण की अजस्र धारा बहा दी है।

इमे हि दैन्येन निमीलितेक्षणा
मुहुः स्खलन्तो विवशास्तुरंङ्गमाः।
गजाश्च सप्तच्छददानगन्धिनो
निवेदयन्तीव रणे निवर्तनम्।।[9]

वही वीर रस में कर्ण पाण्डवों की कठिन रण सीमा में प्रवेश करके अत्यन्त प्रसिद्ध गुणों वाले धर्मराज युधिष्ठिर को बाँध कर अपने तीव्र एवं प्रखर बाणों से अर्जुन को गिराकर (मारकर) अर्थात् पाण्डवों की सेना को भयानक सिंह के मर जाने पर सुगम जंगल की भॉति बनाने की बात करता हैं

समरमुखमसह्यं पाण्डवानां प्रविश्य
प्रथितगुणगणाढयं धर्मराजं च बद्ध्वा।
मम शरवटवेगैरर्जुनं पातयित्वा
वनमिव हतसिहं सुप्रवेशं करोमि।।[10]

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भास प्रणीत कर्णभार नाटक एकांकी होने के साथ भी रंगमंच पर अभिनय दृष्टि से सफल है। इसमें आंगिक, वाचिक, आहार्य एवं सात्विक चारों प्रकार के अभिनय देखने को मिलते हैं। इस प्रकार से कर्णभार नाटक वस्तु, नेता और रस की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है।

सन्दर्भ

1. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–पृ0–274–275
2. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास/डॉ0कपिलदेव द्विवेदी–पृ0–275
3. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/11
4. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/11
5. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–1/12–13
6. कर्णभारम्/पं0 श्री रामजी मिश्र–भूमिका पृष्ठ–17
7. कर्णभारम्/पं0 श्री रामजी मिश्र–भूमिका पृष्ठ–27
8. दशरुपकम्/श्री निवास शास्त्री–3/70–72
9. कर्णभारम्/पं0 श्री रामजी मिश्र–पद्य–11
10. कर्णभारम्/पं0 श्री रामजी मिश्र–पद्य–14